(आदर्श कॉलेज राजधनवार, गिरीडिह)
Semester-II Sub:- PHILOSOPHY
Core-Paper-III
Indian Metaphysics & Epistemology / Arun Kr. Das

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं उत्तर :-

1. ज्ञानमीमांसा में प्रमान कितने है ⇒ 6, (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति एवं अनुपलब्धि)
2. ज्ञान प्राप्त करने के साधन को क्या कहते है ⇒ प्रमाण,
3. ज्ञान प्राप्त करने वाले को क्या कहते है ⇒ ज्ञाता ।
4. ज्ञान के विषय को क्या कहते है ⇒ ज्ञेय ।
5. प्रामाण्यवाद के कितने प्रकार होते है ⇒ (2) दो प्रकार । (स्वत: प्रामाण्यवाद एवं परत: अप्रामाण्यवाद)
6. स्वत: प्रामाण्यवाद एवं परत: अप्रामाण्यवाद को किस दर्शन ने स्वीकार किया है ⇒ मीमांसा दर्शन
7. परत: प्रामाण्यवाद को किस दर्शन ने स्वीकार किया है ⇒ न्याय दर्शन ।
8. ख्यातिवाद शब्द की उत्पत्ति किस धातु से हुआ है ⇒ ख्या धातु से ।
9. ख्यातिवाद का क्या अर्थ है ⇒ भ्रम ज्ञान ।
10. ख्यातिवाद के कितने प्रकार होते है ⇒ 8 (आठ) (अख्यातिवाद, विपरीतख्यातिवाद, अन्यथाख्याति, सत्‌ख्याति, आत्मख्याति, असत्‌ख्याति, एवं सद्सत्‌ख्याति तथा अनिर्वचनीयख्याति)
11. अख्यातिवाद को स्वीकार करने वाले दार्शनिक कौन ⇒ प्रभाकर

12. विपरीतख्यातिवाद को स्वीकार करने वाले दार्शनिक कौन हैं ⇒ कुमारिल भट्ट।
13. अन्यथाख्यातिवाद को स्वीकार करने वाला दर्शन कौन है ⇒ न्याय-वैशेषिक दर्शन।
14. सत्ख्यातिवाद को कौन दर्शन स्वीकार करता है ⇒ सांख्य दर्शन एवं रामानुज।
15. आत्मख्यातिवाद को अन्य किस नाम से जाना जाता है और इसे किस दर्शन ने स्वीकार किया है ⇒ विज्ञानख्यातिवाद एवं बौद्ध दर्शन।
16. असत्ख्यातिवाद को अन्य किस नाम से जाना जाता है और किस दर्शन में इसका उल्लेख मिलता है — शून्यवाद एवं नागार्जुन।
17. अनिर्वचनीयख्यातिवाद को किस दर्शन ने स्वीकार किया है ⇒ अद्वैतवेदान्त एवं शंकराचार्य।
18. परिणामवाद के कितने प्रकार होते हैं ⇒ 2 प्रकार (प्रकृतिपरिणामवाद एवं ब्रह्मपरिणामवाद)।
19. परिणामवाद सिद्धान्त को स्वीकार करने वाला दर्शन कौन है ⇒ सांख्य, योग एवं विशिष्टाद्वैतवेदान्त।
20. सांख्य-योग दर्शन के मत को क्या कहते हैं ⇒ प्रकृतिपरिणामवाद।
21. रामानुज के मत को क्या कहते हैं — ब्रह्मपरिणामवाद
22. विवर्तवाद कारण कार्य सिद्धान्त को किस दार्शनिक ने माना है ⇒ शंकराचार्य।
23. प्रतीत्यसमुत्पाद कारण कार्य सिद्धान्त को किस दर्शन ने स्वीकार किया है ⇒ बौद्ध दर्शन।

Scanned with CamScanner

लघु उत्तरीय

विषयनीष्ठ प्रश्नों के उत्तर :-

1. **प्रमा किसे कहते हैं विवेचना करें।**

उत्तर :- वह वस्तु जिस रूप में है उसी रूप में उस वस्तु का ज्ञान प्राप्त होना प्रमा कहलाता है। प्रमा को यथार्थ ज्ञान कहा जाता है वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होना प्रमा है जैसे - रास्ते का पत्थर, रस्सी इत्यादि यहाँ रास्ते का पत्थर का अर्थ है कि रास्ते में हमें एक पत्थर जैसा वस्तु दिखाई पड़ता है और जब हम उस स्थान पर पहुँचते हैं और यदि वह पत्थर ही है तो इससे हमें पत्थर के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है और यदि यथार्थ ज्ञान है इसे अवास्तविक नहीं कह सकते हैं प्रमा के विपरीत अप्रमा ज्ञान होता है। अप्रमा उस ज्ञान को कहते जो अयथार्थ होता है जिसकी वास्तविक सत्ता नहीं होती है कहने का अर्थ है कि- जो वस्तु जिस रूप में है उस रूप ज्ञान प्राप्त नहीं होना अप्रमा है।

प्रमा ज्ञान प्राप्त करने के निम्नलिखित मार्ग हैं-

1. ज्ञाता :- ज्ञान प्राप्त करने वाले को ज्ञाता कहते हैं।
2. ज्ञेय :- ज्ञान के वस्तु को ज्ञेय कहते हैं।
3. प्रमाण :- ज्ञान प्राप्त करने के मार्ग को प्रमाण कहते हैं

इन तीनों मार्ग पर चल कर हमें वस्तु का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner

2. प्रत्यक्ष प्रमाण के स्वरूप की विवेचना करें।

उत्तर:- भारतीय ज्ञानमीमांसा के सभी दर्शनों में प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार किया गया है। प्रत्यक्ष प्रमाण ज्ञान प्राप्त करने का प्रथम मार्ग है इसके जो ज्ञान प्राप्त होता है वह वास्तविक होता है। ज्ञान इन्द्रियों के जरिए द्वारा जो हमें ज्ञान प्राप्त होता है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं। प्रत्यक्ष का अर्थ ही है आँख के समाने होना। ज्ञात वस्तु को देख कर अज्ञात वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्यक्ष कहलाता है जैसे- जैसे → पर्वत पर धुआ है, क्योंकि वहाँ आग है। पर्वत पर धुआ को देख कह ही हम वहाँ आग का अनुमान करते है और यह सत्य भी है क्योंकि बिना आग का धुँवा सम्भव नही हो सकता है।

प्रत्यक्ष के प्रकार:

प्रत्यक्ष के दो प्रकार होता है जो निम्न है- 1. लौकिक प्रत्यक्ष 2. अलौकिक प्रत्यक्ष

1. लौकिक प्रत्यक्ष :- जो ज्ञान हमें साधारण रूप से प्राप्त होता है वह लौकिक प्रत्यक्ष कहलाता है ये दो प्रकार का होता है - 1. बाह्य प्रत्यक्ष, 2. मानस

2. अलौकिक प्रत्यक्ष :- जो ज्ञान हमें असाधारण रूप से प्राप्त होता है उसे अलौकिक प्रत्यक्ष कहते हैं।

अलौकिक प्रत्यक्ष के तीन प्रकार होता है →

1. सामान्य लक्षण, 2- ज्ञान लक्षण 3. योगज प्रत्यक्ष

Scanned with CamScanner

3. कारण कार्य सिद्धान्त के रूप में प्रतीत्यसमुत्पाद के स्वरूप की विवेचना करें।

उत्तर:

प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध दर्शन का केन्द्रीय सिद्धान्त है। यह बौद्ध दर्शन के द्वितीय आर्य के अन्तर्गत है, दुःख उत्पत्ति का कारण है। प्रतीत्यसमुत्पाद धर्मकारणवाद है। प्रतीत्यसमुत्पाद दो शब्दों के योग से बना है वे शब्द है - "प्रतीत्य" एवं 'समुत्पाद'। यहाँ 'प्रतीत्य' का अर्थ है 'अपेक्षा रख कर' या 'निर्भर'। एवं 'समुत्पाद' का अर्थ है- 'उत्पत्ति' अतः प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ है — कारण की अपेक्षा रखकर या कारण पर निर्भर रहकर कार्य की उत्पत्ति;।

कहने का अर्थ है कि कार्य सदा कारण पर निर्भर रहता है बिना कारण कुछ नहीं है। सकता है सापेक्ष दृष्टि से प्रतीत्यसमुत्पाद दुःखसमुदाय-रूप संसार है। इसका नियम है - 'अस्मिन सति, इदं भवति' अर्थात कारण के होने पर कार्य होता है। प्रतीत्यसमत्पाद को बुद्ध ने धर्म की संज्ञा भी दी है, उस धर्म की, जिसमें बोधि अन्तर्निहित है। इसे द्वादशनिदान भी कहा जाता है। इसे भवचक्र, संसार चक्र जन्ममरण चक्र और धर्म-चक्र भी कहा जाता है। इसमें जीवन के 12 कारणों का उल्लेख मिलता है जो निम्न है → 1. अविद्या, 2. संस्कार, 3-विज्ञान, 4. नाम-रूप, 5-षडायतन 6.- स्पर्श 7.- वेदना 8.- तृष्णा। 9.- उपादान 10-भव 11- जाति और 12-जरा-मरण।

Scanned with CamScanner

दर्शनशास्त्र विभाग
आदर्श कॉलेज, राजखन्नावाट

4. विपरीतख्यातिवाद के स्वरूप कि विवेचना करें।

उत्तर :- विपरीतख्यातिवाद ख्यातिवाद का एक भाग है। विपरीतख्यातिवाद के विचार से पहले हमें ख्याति को समझना होगा।

~~भारतीयज्ञानमीमांसा~~

भारतीय ज्ञानमीमांसा में ख्यातिवाद 'ख्या' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है- भ्रमज्ञान या मिथ्याज्ञान, कहने का अर्थ है कि वस्तु के काल्पविक रूप का ज्ञान न प्राप्त हो कर भ्रमज्ञान प्राप्त होता है जैसे- शुक्ति को रजत समझना।

ख्यातिवाद के निम्नलिखित प्रकार है जो निम्न है → अख्यातिवाद, विपरीतख्याति, अन्यथाख्याति असत्ख्याति, सत्ख्याति, आत्मख्याति, शून्यख्याति एवं अनिर्वचनीयख्याति।

विपरीतख्याति :- कुमारिल भट्ट के मत को विपरीतख्याति कहते हैं। कुमारिल के अनुसार भ्रम एक ज्ञान है, दो भिन्न अपूर्ण ज्ञान नहीं। प्रभाकर के समान कुमारिल यह तो स्वीकार करते हैं कि शुक्ति (सिप)- रजत (चाँदी) के भ्रम (गलत) में शुक्ति के शुक्तित्वधर्मरहित इदमंश की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है और द्रव्यांशरहित रजत का स्मरण होता है, किन्तु वे यह नहीं मानते कि भ्रम देखने योग है और स्मरण मात्र वस्तुओं का भेद है। अतः कुमारिल का मत विपरीतख्याति वाद कहलाता है।

Scanned with CamScanner

classmate
Date
Page

अभ्यास करें :—

1. बौद्ध दर्शन के अनुसार सामान्य क्या है, विवेचना करें।
2. प्रमाण्यवाद के स्वरूप की विवेचना करें।
3. अख्यातिवाद क्या विवेचना करें।
4. प्रमा और अप्रमा के बीच अन्तर स्पष्ट करें।
5. स्वतः प्रमाण्यवाद की विवेचना करें।
6. प्रमाण के स्वरूप की विवेचना करें।

अरुण कुमार दास

Scanned with CamScanner